2.2.1 संस्थान प्रवेश के बाद छात्रों के सीखने के स्तर का आकलन करता है और विशेष कार्यक्रम (भ्रमण कार्यक्रम/गुरुकुल/ संस्कृत सम्भाषण शिविर/शिविर/कार्यशाला/विज्ञान प्रशंसा/कर्मकांड कार्यक्रम/ संवाद कार्यशाला (मौखिक और लिखित) कार्यशालाएं/सांस्कृतिक संग्रहालय भ्रमण) आयोजित करता है। उन्नत शिक्षार्थियों और धीमी गति से सीखने वालों के लिए पांडुलिपि पुस्तकालय/ग्रीष्मकालीन विद्यालय आदि)।

The Institution assesses the learning levels of the students, after admission and organises special programmes (including Tour programs/ Gurukulas/ spoken Sanskrit shibirams/ camps/ workshops/ Science Appreciation/ Program of Karmakanda/ Communication (Oral and written) workshops/ Cultural musuem visits and manuscript liabraries/summer schools etc.) for advanced learners and slow learners.

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय प्रवेश के बाद छात्रों के सीखने के स्तर का आकलन करता है और विशेष कार्यक्रम (भ्रमण कार्यक्रम/गुरुकुल/ संस्कृत सम्भाषण शिविर/शिविर/कार्यशाला/विज्ञान प्रशंसा/कर्मकांड कार्यक्रम/ संवाद कार्यशाला (मौखिक और लिखित) कार्यशालाएं/सांस्कृतिक संग्रहालय भ्रमण) आयोजित करता है। उन्नत शिक्षार्थियों और धीमी गति से सीखने वालों के लिए पांडुलिपि पुस्तकालय/ग्रीष्मकालीन विद्यालय आदि)।

प्रवेश के समय अधिगम स्तर भी भिन्न होता है। विशिष्ट छात्रों और सामान्य छात्रों के लिए नीचे दिए हुए प्रक्रिया को आधारित करके यह व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा सञ्चालित की जाती है-

1. शास्त्री-आचार्य कक्षाओं में नामांकित विद्यार्थियों की पिछली कक्षाओं में ली गई परीक्षा के परिणाम के आधार पर पात्रता निर्धारित की जाती है।

2. प्रवेश के समय ही विद्यार्थियों की उन्नत योग्यताओं एवं सामान्य योग्यताओं का निर्धारण या मूल्यांकन वाक् परीक्षा (काउंसलिंग) के माध्यम से छात्रों के स्तरों का आंकलन किया जाता है।

3. पुनः इकाई परीक्षण विशेष समझ और सामान्य समझ को निर्धारित करता है।

4. शास्त्री के दूसरे और तीसरे वर्ष में, आचार्य के पहले, दूसरे और तीसरे सेमेस्टर में विश्वविद्यालय स्तर के मूल्यांकन के साथ सेमेस्टर के अंत की परीक्षा के परिणामों के आधार पर छात्रों का बौद्धिक स्तर निर्धारण किया जाता है।

प्रायः विभागों में सामान्य और असाधारण दोनों तरह के छात्र होते हैं। असाधारण छात्रों को कम समय में समझ में आ जाता है, लेकिन सामान्य छात्रों का विशेष ध्यान देना पड़ता है इसलिए, इन सामान्य छात्रों के लिए सीखने के स्तर को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा कई विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जैसे-

धीमी गति से सीखने वाले छात्रों के लिए शुरू की गई परियोजनाएँ -

- **पृथक् कक्षाग्रहण**
- **सरल मानक संस्कृत प्रयोग**
- **पूर्वाभ्यास**
- प्र**दत्तकार्य** निरीक्षण
- संवादावसर
- **शब्दकोशवर्धन**

पृथक् कक्षाग्रहण- शिक्षक सामान्य छात्रों को अतिरिक्त समय देकर विभाग और घर पर पढ़ाते हैं।

सरल मानक संस्कृत प्रयोग- सामान्य छात्र शास्त्रीय कठिन विषयों के पारिभाषिक शब्दों को समझने में समर्थ नहीं होते अतः सरल शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

पूर्वाभ्यास- शिक्षण के दौरान पूर्वाभ्यास का महत्व सामान्य विद्यार्थियों को विषयों की समझ के लिए दिया जाता है।

प्र**दत्तकार्य** निरीक्षण- शिक्षण के दौरान शिक्षकों द्वारा विशेष रूप से सामान्य छात्रों को पाठ्यक्रम के दौरान विषय को समझने के लिए गृहकार्य भी दिया जाता है और पश्चात का निरीक्षण भी किया जाता है। प्रदत्तकार्य की निगरानी भी की जाती है।

संवादावसर- सामान्य छात्रों को अपने भाषण कौशल को बनाने के लिए एक-दूसरे के साथ बातचीत करने का महत्व दिया जाता है। शिक्षक प्रायः कक्षा में ऐसा वातावरण तैयार करते हैं ताकि छात्र उन्नत छात्रों के साथ संस्कृत में वार्तालाप कर सकें।

शब्दकोशवर्धन- शिक्षक सामान्य छात्रों के लिए आकृति को दिखाकर शब्दों का अभ्यास करने और उनकी शब्दावली को बढ़ाने के अवसर पैदा करते हैं।

तीव्र **गति से सीखने वाले छात्रों के लिए शुरू की गई परियोजनाएँ -**

१. **वाग्वर्धिनी परिषद्** - प्रत्येक विभाग उन्नत छात्रों के लिए वाग्वर्धिनी परिषद का आयोजन करता है जहां छात्र अपने बोलने के कौशल को बेहतर बनाने के लिए किसी दिए गए

विषय पर व्याख्यान देते हैं। धीमी गति से सीखने वाले भी अपने अनुभव को बढ़ाने के लिए परिषद में भाग लेते हैं।

२. **शास्त्र** प्रोढि-संस्कृत साहित्य में प्रोढ़ शास्त्र भी हैं जिन्हें कुछ विषय विशेषज्ञ विद्वानों के बिना समझा नहीं जा सकता। इसलिए विश्वविद्यालय द्वारा उन्नत छात्रों के लिए 'शास्त्र प्रौढि' कार्यक्रम भी इंटरनेट के माध्यम से संचालित किया जाता है। यहां संबंधित विषयों के विशेषज्ञ प्रौढ ग्रंथों को सरल तरीके से बताते हैं ताकि छात्र उन्हें ठीक से समझ सकें।

3. **श्रुति निस्वनः**- इस कार्यक्रम के माध्यम से विशेष रूप से उन्नत छात्रों को लाभ पहुंचाने के लिए देश के प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा वेदों पर विशेष व्याख्यान दिए जाते हैं।

४. **शास्त्रीयव्याख्यानमाला-** शास्त्रीयव्याख्यानमाला के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा कई विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। यह उन्नत शिक्षार्थियों को उन विषयों को जानकर विशेषज्ञों से लाभ उठाने में सक्षम बनाता है।

दोनों प्रकार के **छात्रों के लिए शुरू की गई परियोजनाएँ -**

भ्रमण कार्यक्रम- विश्वविद्यालय के छात्रों और छात्राओं के भौगोलिक ज्ञान को बढ़ाने और वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप से समझने के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम आयोजित कराया जाता है।

गुरुकुल- गुरुकुल प्रणाली की तरह विश्वविद्यालय के छात्र और शिक्षक अध्ययन और अध्यापन करते हैं। गुरुकुल में छात्र धोती और उत्तरीय आदि पहनते हैं और गुरु के सान्निध्य में शास्त्रों का अभ्यास करते हैं। वे ग्रंथों के आरंभ में माङ्गलिक वाक्यों से ग्रंथ का

आरंभ करते हैं। गुरु और शिष्य के बीच का सम्बन्ध गुरु के परिवार जैसा माना जाता है। यहां विद्यार्थी शिक्षकों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं। शिक्षक भी अपने शिष्यों को अपने पुत्र के समान शिक्षा देते हैं। विश्वविद्यालय में कई मंदिर हैं जहां लोग गुरुकुल की तरह जाकर छात्र एवं शिक्षक प्रार्थना करते हैं।

संस्कृतसंभाषण शिविर- संस्कृत को हर किसी को सिखाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में संस्कृत संभाषण शिविर आयोजित किये जाते हैं। आयोजित शिविरों में शिक्षक सरल मानक विधि से संस्कृत वार्तालाप सिखाते हैं। वहां वे सामान्य और असाधारण विद्यार्थियों को संबंधी वस्तुएं दिखाते हैं और उन्हें संस्कृत शब्दों में बताते हैं। अत: विद्यार्थी आसानी से संस्कृत वार्तालाप में पारंगत हो जाते हैं। जो विद्यार्थी संस्कृत वार्तालाप में पारंगत होते हैं उन्हें शास्त्रज्ञान भी आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

शिविर- विश्वविद्यालय समय समय पर विभिन्न प्रकार के शिविरों का भी आयोजन करता है।

कार्यशालाएँ- विश्वविद्यालय अपने स्तर पर और अन्य संस्थानों के सहयोग से कार्यशालाओं का आयोजन करता है। कार्यशाला में अन्य संस्थानों के छात्र और शिक्षक भाग लेते हैं। कार्यशाला में किसी विशेष विषय पर साप्ताहिक चर्चा होती है। कार्यशाला को न केवल शास्त्रीय विषयों बल्कि पांडुलिपि जैसे विषयों को भी शामिल किया जाता है।

विज्ञानप्रशंसा- यहां के शिक्षक विज्ञान की सराहना करते हुए विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को शास्त्रीय ज्ञान पद्धति के साथ-साथ वैज्ञानिक सिद्धांतों को अपनाने के लिए भी पढ़ाते और प्रेरित करते हैं। छात्र अपने वैज्ञानिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए वनस्पति क्षेत्र इत्यादि की यात्राएँ भी करते हैं। यहाँ विश्वविद्यालय के विज्ञान विभाग के अध्यापक तथा शास्त्र पाठ्यक्रमों के अध्यापक एवं विद्यार्थियों को वैज्ञानिक तथ्य एवं उनका स्वरूप

एवं विशिष्टता तथा उपयोगिता आदि को समझाते हैं। परिसर में एक वनस्पति उद्यान भी स्थापित है जहाँ छात्र रहते हैं। वहाँ स्वाभाविक रूप से विज्ञान का अध्ययन करते हैं।

कर्मकाण्ड कार्यक्रम- इस विश्वविद्यालय में छात्रों और शिक्षकों द्वारा कर्मकाण्ड कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। कर्मकाण्ड समारोहों में यज्ञों का सम्पादन प्रत्यक्ष विधि द्वारा सिखाया जाता है। यज्ञ का उद्देश्य विश्वव्यापी कल्याण होता है। कोरोना वायरस के दौरान विश्वविद्यालय के वेद विभाग में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के साथ-साथ जनपद स्तर के अधिकारियों द्वारा रीति-रिवाज के आधार पर अनेक यज्ञ किये गये थे। छात्र और शिक्षक विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस, शिवरात्रि, वसंत पंचमी, श्रावणी उपाकर्म आदि के अवसर पर यज्ञ करते हैं।

संवाद कार्यशाला- (मौखिक और लिखित) छात्रों के लाभ के लिए, विश्वविद्यालय यथासमय मौखिक और लिखित संवाद कार्यशालाएँ भी आयोजित करता है।

सांस्कृतिक संग्रहालय यात्रा- यहां के छात्र प्राच्य वस्तुओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए अपने शिक्षकों के साथ सांस्कृतिकसंग्रहालय की यात्रा पर भी जाते हैं। सांस्कृतिक संग्रहालय में छात्र इतिहास विषयक वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप से देखकर संवाद के माध्यम से अपने अनुभवों को एक-दूसरे तक प्रसारित करते हैं।

हस्तलेखागार यात्रा- इस विश्वविद्यालय के 'पांडुलिपि भवन' में संस्कृत की प्रचुर पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं। छात्र और शिक्षक समय-समय पर अपने ज्ञान और अनुभव को बढ़ाने के लिए हस्तलेखागार पुस्तकालय में जाते हैं और पढते हैं।